मनुस्मृति में निहित सामाजिक संस्कारों का वर्तमान में प्रासंगिकता

दीपक कुमार

हमारे पूर्व–पुरुषों ने भारतीय आचार–संहिता के रूप में स्मृतियों की रचना की है जिनमें मानवीय–कर्त्तव्यों का बोध कराया गया है। वेदों तथा स्मृतियों के उपदेश पूर्णतया मनोवैज्ञानिक एंव प्रभु–संमित हैं। अर्थात आदेशात्मक हैं। पुराणों के उपदेश कथाओं के माध्यम से तथा काव्यों में सौन्दर्य–बोध कराते हुए प्रदान किए जाते हैं इन्हें क्रमशः सुहृत्संमित तथा कान्ता–सम्मित कहा गया है। हम इन उपदेशात्मक आचरणों को जीवन में उतारकर ही शिक्षा का अपेक्षित एवं गुणात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। उक्त ग्रन्थों में मनुस्मृति का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि इसकी रचना तत्कालीन सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक आदि परिवेशों को ध्यान में रखकर की गयी है। तथापि समाज के नैतिक उन्नयन एवं पारस्परिक सौमनस्य के विकास हेतु वर्तमान में भी इसकी उपादेयता असंदिग्ध है।